



सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

## कहानी

# लालच का फल और समझदारी की जीत

बहुत समय पहले की बात है. एक विशाल और सुंदर जंगल था, जहाँ चारों तरफ ऊँचे पेड़, रंग-बिरंगे फूल और चहचहाते पक्षी रहते थे. उसी जंगल के बीच से एक गहरी और चौड़ी नदी बहती थी. नदी का पानी साफ और ठंडा था. नदी के किनारे एक बहुत पुराना और घना जामुन का

करता. उसी नदी में एक मगरमच्छ भी रहता था. मगरमच्छ अक्सर नदी के किनारे आकर धूप सेकता और आराम करता था. एक दिन मगरमच्छ की नजर पेड़ पर बैठे बंदर पर पड़ी. उस दिन बंदर जामुन खा रहा था. उसने देखा कि मगरमच्छ उसे ध्यान से देख रहा है. बंदर

खाए थ. उस दिन के बाद मगरमच्छ रोज उस पेड़ के पास आने लगा. बंदर भी रोज उसे जामुन खिलाता. दोनों आपस में बातें करते, हँसते और धीरे-धीरे अच्छे दोस्त बन गए. मगरमच्छ को यह दोस्ती बहुत अच्छी लगती थी. वह घर जाकर अपनी पत्नी को भी बंदर के लिए जामुन खिलाता. मगरमच्छ की पत्नी को जामुन तो बहुत पसंद आए, लेकिन उसके मन में लालच पैदा हो गया. एक दिन मगरमच्छ की पत्नी ने कहा, 'अगर जामुन इतने मीठे हैं, तो बंदर का दिल कितना मीठा होगा. मुझे बंदर का दिल खाना है.' यह सुनकर मगरमच्छ घबरा गया. वह जानता था कि बंदर उसका सच्चा दोस्त है, लेकिन पत्नी के बार-बार कहने पर वह उलझन में पड़ गया. पत्नी ने धमकी दी कि अगर वह बंदर का दिल नहीं लाया, तो वह खाना नहीं खाएगी.

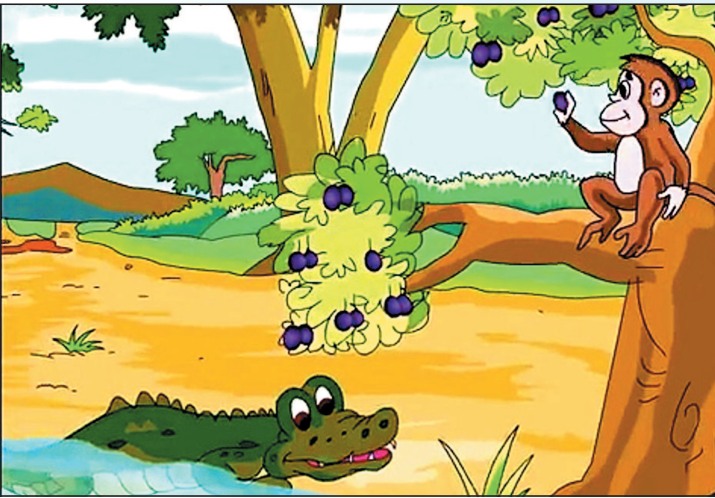
अगले दिन मगरमच्छ उदास मन से बंदर के पास पहुँचा. बंदर ने उसकी उदासी देख ली और पूछा, 'मित्र, आज तुम इतने दुखी क्यों लग रहे हो?' मगरमच्छ ने सच्चाई छुपाते हुए कहा, 'मेरी पत्नी बहुत बीमार है. वह तुमसे मिलना चाहती है. अगर तुम हमारे घर चलो, तो वह ठीक हो जाएगी.' बंदर को अपने दोस्त पर पूरा भरोसा था, इसलिए वह बिना सोचे तैयार हो गया.

मगरमच्छ ने बंदर से कहा कि वह उसकी पीठ पर बैठ जाए, क्योंकि नदी बहुत गहरी थी. बंदर उसकी पीठ पर बैठ गया और मगरमच्छ तैरने लगा. जब वे नदी के बीच पहुँचे, तो मगरमच्छ का मन भारी हो गया. उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने सच्चाई बता दी. उसने कहा,

'मित्र, मेरी पत्नी तुम्हारा दिल खाना चाहती है. इसलिए मैं तुम्हें अपने घर ले जा रहा हूँ.' यह सुनकर बंदर बहुत डर गया, लेकिन उसने घबराहट नहीं दिखाई. उसने अपनी बुद्धि से काम लिया और शांत स्वर में कहा, 'अरे मित्र, तुमने पहले क्यों नहीं बताया? मैंने तो अपना दिल पेड़ पर ही छोड़ दिया है. बंदर अपना दिल हमेशा पेड़ पर सुरक्षित रखते हैं. पहले मुझे वापस पेड़ पर ले चलो, मैं दिल लेकर आ जाऊँगा.' मगरमच्छ सीधा-सादा था, उसे बंदर की चाल समझ में नहीं आई.

मगरमच्छ तुरंत वापस मुड़ गया और बंदर को पेड़ के पास छोड़ दिया. जैसे ही बंदर पेड़ पर चढ़ा, वह तेजी से ऊपर चला गया. फिर उसने ऊपर से कहा, 'मगरमच्छ, तुमने दोस्ती के साथ धोखा किया. दिल कोई पेड़ पर नहीं छोड़ता. मैं तुम्हारी चाल समझ गया था. अब मैं तुम पर कभी भरोसा नहीं करूँगा.' मगरमच्छ को अपनी गलती पर बहुत पछतावा हुआ. मगरमच्छ ने बंदर से माफ़ी माँगी, लेकिन बंदर समझ चुका था कि लालच और धोखे से भरी दोस्ती खतरनाक होती है. उसने दूरी बनाए रखना ही सही समझा. इसके बाद बंदर ने अपनी बुद्धि से हमेशा काम लिया और सुरक्षित रहा. मगरमच्छ भी अपनी गलती से सीख लेकर वापस नदी में चला गया.

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि मुश्किल समय में बुद्धि और समझदारी सबसे बड़ा हथियार होती है. साथ ही, बिना सोचे-समझे किसी पर भरोसा नहीं करना चाहिए और लालच हमेशा नुकसान पहुँचाता है.

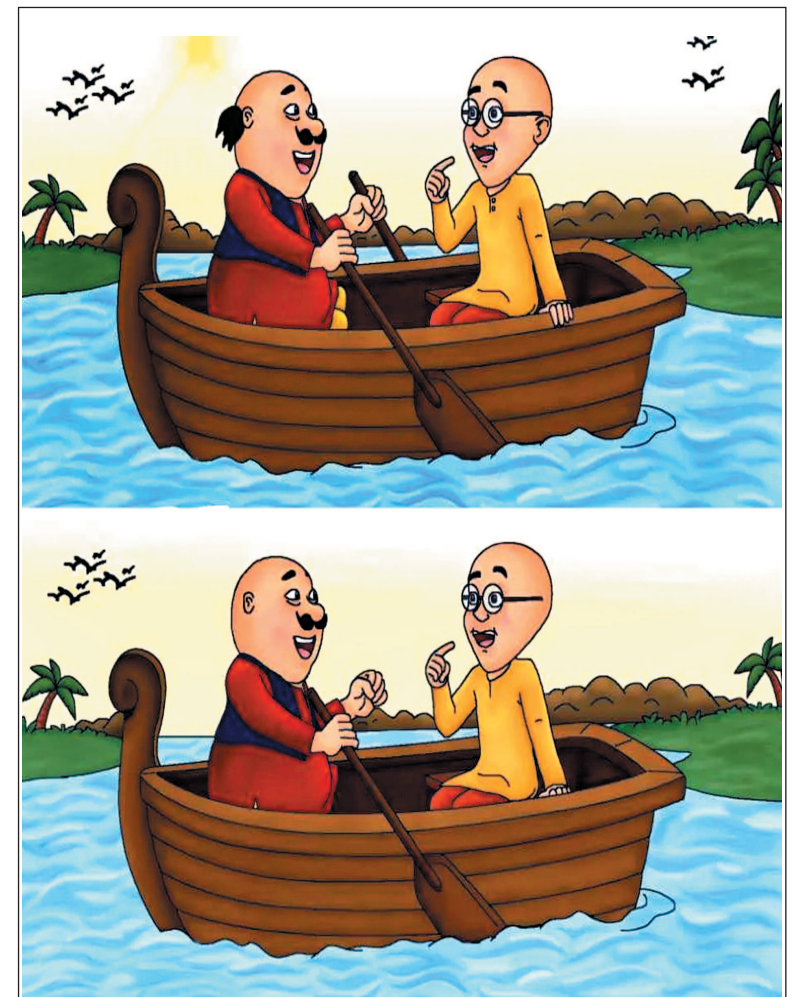


पेड़ था, जो साल भर हरे-भरे पत्तों और मीठे जामुनों से भरा रहता था. उसी पेड़ पर एक चंचल, समझदार और तेज दिमाग वाला बंदर रहता था. बंदर का दिन बहुत मजे में बीतता था. वह सुबह-सुबह पेड़ पर कूदता, शाखाओं पर झूलता और मीठे जामुन खाता. दोपहर में वह नदी का सुंदर नजारा देखता और शाम को आराम

स्वभाव से दयालु था. उसने सोचा कि मगरमच्छ को भी जामुन खिलाने चाहिए. उसने कुछ जामुन तोड़े और नदी में बैठे मगरमच्छ की ओर फेंकते हुए कहा, 'मित्र, ये जामुन बहुत मीठे हैं, तुम भी खाओ.' मगरमच्छ ने जामुन खाए और बहुत खुश हुआ. उसने पहले कभी इतने स्वादिष्ट फल नहीं

## अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.



1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50.

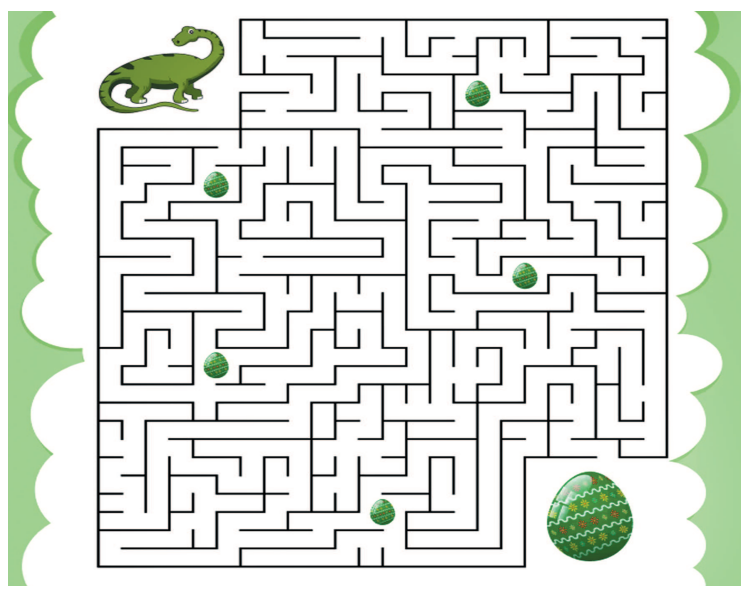
## कविता

### माँ

माँ मेरी सबसे प्यारी है,  
ममता से भरी  
दुलारी है.  
जब भी मैं रोता हूँ,  
माँ मुझे हँसाती है.  
दिन-रात मेरा ध्यान  
रखे,  
हर दुख मुझसे दूर रखे.  
माँ के बिना  
सूना संसार,  
माँ है जीवन का आधार.



## भूल भुलैया



## जानकारी

### कंप्यूटर और मोबाइल का सही उपयोग

आज के समय में कंप्यूटर और मोबाइल हमारे जीवन का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं. पढ़ाई, जानकारी, मनोरंजन और संपर्क के लिए इनका उपयोग तेजी से बढ़ा है. यदि इनका सही तरीके से उपयोग किया जाए, तो ये हमारे लिए बहुत फायदेमंद होते हैं, लेकिन गलत उपयोग करने से नुकसान भी हो सकता है. इसलिए बच्चों को कंप्यूटर और मोबाइल का सही उपयोग जानना बहुत जरूरी है.

कंप्यूटर और मोबाइल का सबसे अच्छा उपयोग पढ़ाई के लिए किया जा सकता है. इनके माध्यम से बच्चे ऑनलाइन कक्षाएँ देख सकते हैं, शैक्षणिक वीडियो सीख सकते हैं और नई-नई जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. इंटरनेट पर ई-बुक, शब्दकोश और शैक्षिक ऐप्स उपलब्ध हैं, जो पढ़ाई को आसान और रोचक बनाते हैं. सही जानकारी पाने के लिए कंप्यूटर और मोबाइल बहुत सहायक होते हैं. इन उपकरणों का उपयोग ज्ञान बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है. बच्चे विज्ञान, इतिहास, गणित और सामान्य ज्ञान से जुड़े विषयों के बारे में सीख सकते हैं. कंप्यूटर से टाइप करना, चित्र बनाना और प्रेजेंटेशन तैयार करना सीखा जा सकता है, जो आगे चलकर बहुत काम आता है. मोबाइल के जरिए भी कई सीखने वाले ऐप्स होते हैं, जिनसे नई

भाषाएँ और कौशल सीखे जा सकते हैं. हालाँकि, कंप्यूटर और मोबाइल का अधिक उपयोग सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है. ज्यादा देर तक स्क्रीन देखने से आँखों में दर्द, सिरदर्द और थकान हो सकती है. मोबाइल पर ज्यादा गेम खेलना या वीडियो देखना समय की बर्बादी है. इससे पढ़ाई पर बुरा असर पड़ता है और बच्चे आलसी भी हो सकते हैं. इसलिए इनका सीमित और सही समय पर उपयोग करना चाहिए.

कंप्यूटर और मोबाइल का उपयोग करते समय सुरक्षा का ध्यान रखना भी बहुत जरूरी है. बच्चों को किसी अनजान व्यक्ति से बात नहीं करनी चाहिए और अपनी निजी जानकारी जैसे नाम, पता या पासवर्ड किसी को नहीं बताना चाहिए. माता-पिता की अनुमति से ही इंटरनेट का उपयोग करना चाहिए और गलत वेबसाइटों से दूर रहना चाहिए.

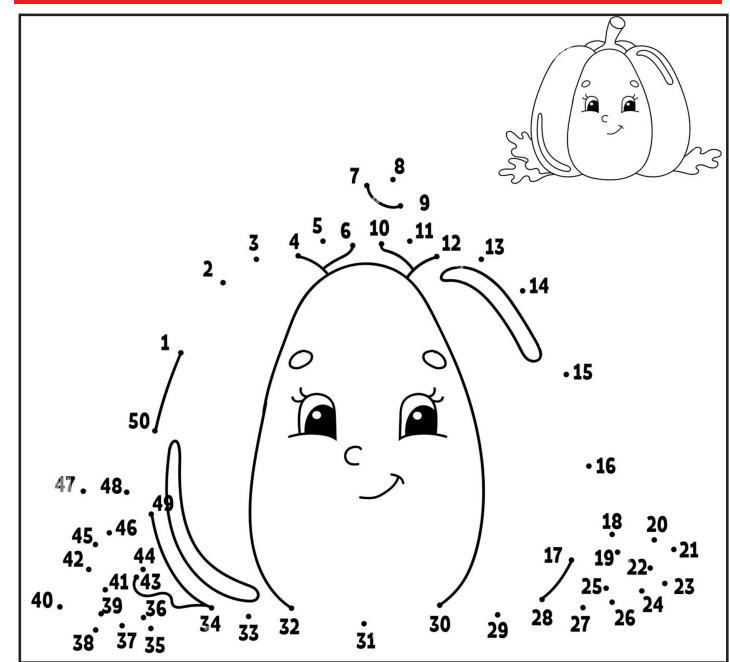
अंत में, यही कहा जा सकता है कि कंप्यूटर और मोबाइल बहुत उपयोगी साधन हैं, यदि उनका सही और संतुलित उपयोग किया जाए. पढ़ाई, ज्ञान और रचनात्मक कार्यों के लिए इनका उपयोग करें, लेकिन खेल-कूद, किताबें पढ़ना और परिवार के साथ समय बिताना भी उतना ही जरूरी है. सही उपयोग से ही कंप्यूटर और मोबाइल हमारे अच्छे मित्र बन सकते हैं.



## रंग भरो



## बिंदु मिलाओ



## योग के फायदे और तथ्य

- योग की शुरुआत भारत में लगभग 5000 साल पहले हुई थी.
- 'योग' शब्द का अर्थ होता है 'जुड़ना', यानी शरीर, मन और आत्मा का मेल.
- रोज योग करने से



- शरीर मजबूत और लचीला बनता है.
- योग करने से मन शांत रहता है और गुस्सा कम होता है.
- योग से एकाग्रता

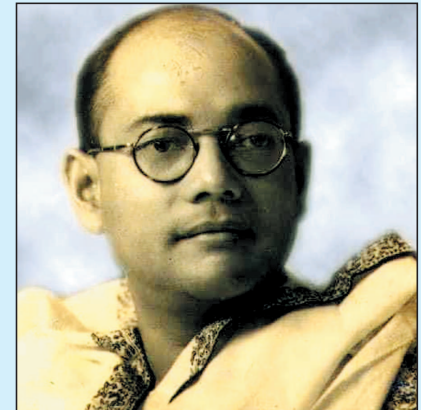
- बढ़ती है, जिससे पढ़ाई में मदद मिलती है.
- योग करने से साँस लेने की क्षमता बेहतर होती है.
- बच्चों के लिए सूर्य नमस्कार एक पूरा व्यायाम माना जाता है.
- योग से तनाव और डर कम होता है.
- योग करने से पाचन तंत्र ठीक रहता है.
- रोज योग करने से अच्छी नींद आती है और शरीर तरोताजा रहता है.

## प्रेरक प्रसंग

### कर्मयोगी सुभाष चंद्र बोस

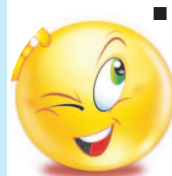
सुभाष चंद्र बोस भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सबसे साहसी, निडर और क्रांतिकारी नेताओं में से एक थे. उन्हें 'नेताजी' के नाम से जाना जाता है. उनका जीवन केवल भाषणों तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने अपने कार्यों से यह दिखाया कि देश की आजादी के लिए हर प्रकार का बलिदान दिया जा सकता है. सुभाष चंद्र बोस का मानना था कि भारत को केवल अहिंसा से नहीं, बल्कि संगठित शक्ति और अनुशासन से भी स्वतंत्र कराया जा सकता है.

सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को ओडिशा के कटक शहर में हुआ था. वे पढ़ाई में बहुत तेज थे और उन्होंने इंग्लैंड जाकर भारतीय सिविल सेवा का कठिन परीक्षा पास की. यह उस समय बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाती थी, लेकिन उन्होंने अंग्रेज सरकार की नौकरी करने से इंकार कर दिया. उनका यह कदम यह दिखाता है कि वे आराम और प्रतिष्ठा से ज्यादा देश की सेवा को महत्व देते थे. उन्होंने एक सुरक्षित भविष्य छोड़कर भारत की आजादी के संघर्ष को चुना. भारत लौटने के बाद सुभाष चंद्र बोस ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू किया. वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े और जल्दी ही एक प्रभावशाली नेता बन गए. वे कांग्रेस के अध्यक्ष भी चुने गए, लेकिन उनके विचार महात्मा गांधी और अन्य नेताओं से अलग थे. सुभाष बाबू मानते थे कि अंग्रेज सरकार भारत को आसानी से आजाद नहीं करेगी, इसलिए उन्हें सशक्त तरीके से चुनौती देना जरूरी है. इसी विचारों के मतभेद के कारण उन्होंने कांग्रेस से अलग होकर अपना रास्ता चुना.



सुभाष चंद्र बोस का सबसे बड़ा योगदान आजाद हिंद फौज का गठन था. उन्होंने विदेश जाकर भारतीय सैनिकों और युवाओं को संगठित किया और एक सशक्त सेना बनाई. यह सेना पूरी तरह भारत की आजादी के लिए समर्पित थी. उन्होंने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' जैसा ओजस्वी नारा दिया, जिसने लाखों भारतीयों में देशभक्ति की भावना जगा दी. आजाद हिंद फौज ने अंग्रेजों के खिलाफ सीधी लड़ाई लड़ी और भारत की स्वतंत्रता की नींव को और मजबूत किया. सुभाष चंद्र बोस ने केवल सेना ही नहीं बनाई, बल्कि एक स्वतंत्र भारतीय सरकार की स्थापना भी की, जिसे 'आजाद हिंद सरकार' कहा गया. इस सरकार को कई देशों का समर्थन मिला. उन्होंने अंडमान और निकोबार द्वीपों को आजाद कराया और उनका नाम 'शहीद' और 'स्वराज' रखा. यह पहली बार था जब भारत की जमीन पर तिरंगा अंग्रेजों से अलग एक भारतीय सरकार द्वारा फहराया गया. नेताजी का जीवन अनुशासन, साहस और त्याग का प्रतीक था. उन्होंने महिलाओं को भी आजादी के संघर्ष में आगे आने के लिए प्रेरित किया और रानी लक्ष्मीबाई रेजीमेंट की स्थापना की.

### बूझो तो जानें



- मैं हूँ सफेद, उड़ता नहीं, खाता मुझे बच्चा और बुढ़ा भी.
- बिना पंख के उड़ता हूँ, बिना पैरों के दौड़ता हूँ, हर घर में रहता हूँ.
- मुझे काटो तो दर्द न होगा, मुझे छुओ तो हाथ लगेगा, रंगीन होता हूँ मैं अक्सर.

उत्तर: दूध  
उत्तर: सभय

### हंसी-टिटोली



- टीचर - बताओ, जो हमेशा हँसता रहता है वह कौन है?
- बच्चा - हँसता... पागल!
- पप्पू - मम्मी, मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा.
- मम्मी - क्यों?
- पप्पू - क्योंकि छुट्टी है!
- टीचर - बताओ सूरज और चाँद में क्या फर्क है?
- बच्चा - सूरज रोज काम पर जाता है, चाँद सिर्फ रात में!
- बाँय - मम्मी, मैं भूखा हूँ.
- मम्मी - अच्छा, पपीता खा लो.
- बाँय - पपीता कहीं है?
- मम्मी - जो पेट में है वही खा लो!
- पप्पू - डॉक्टर साहब, मुझे भूलने की बीमारी हो गई है.
- डॉक्टर - कब से?
- पप्पू - कब से क्या?
- टीचर - बताओ, पानी टंडा क्यों होता है?
- बच्चा - ताकि हम पानी पीकर और गर्म हो जाएँ!
- मम्मी - स्कूल से घर आते ही हाथ धो लो.
- बच्चा - ठीक है, मम्मी... पर खाने से पहले या बाद में?

उत्तर: सब्जी  
उत्तर: चाँद

उत्तर: सब  
उत्तर: सितारा

उत्तर: चुंबक

बच्चों अपनी कहानियाँ, कविताएँ, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएँ आदि [dhpalnav@gmail.com](mailto:dhpalnav@gmail.com) पर मेल करें.